औद्योगीकरण का नगरीय विकास पर प्रभाव : राँची एवं जमशेदपुर नगर के संदर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ0 रेखा चौधरी*

औद्योगीकरण आधुनिक समाज की प्रमुख विशेषताओं में से है। इसने समस्त विश्व के सामाजिक अर्थव्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन लाया है तथा लाने का प्रयत्न किया है। मूलरूप से यह एक आर्थिक प्रक्रिया है पर इसका सामाजिक परिणाम बहुत दूरगामी होता है। औद्योगीकरण के चलते अर्थव्यस्था एवं सामाजिक संरचना में भारी परिवर्तन आया है। इसका प्रभाव मात्र हमारे सामाजिक जीवन तक ही सीमित नहीं होता बल्कि संस्कृति के क्षेत्र में भी इसके कारण काफी परिवर्तन आए है। औद्योगीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें आधुनिकतम प्रौद्योगिक ज्ञान का प्रयोग किया जाता है और जिसका उद्देश्य उत्पादन के साधनों में वृद्धि करना, मनुष्यों की जगह मशीनो पर निर्भरता बढ़ती है और प्रकृति पर मनुष्यों पर नियंत्रण में वृद्धि होती है। जैसा की एवरक्रामी ने कहा है कि औद्योगीकरण मूलतः एक आर्थिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत मशीनों के माध्यम से उत्पादन में वृद्धि की जाती है। यह कोई ऐसी प्रक्रिया नहीं है जो सिर्फ कल कारखानों तक ही सीमित रहती है। प्रारंभ में यह प्रक्रिया कल कारखानों तक अवश्य सीमित थी, पर वर्तमान काल में यह एक व्यापक प्रक्रिया बनकर उभरी है। जहां कहीं भी आधुनिक मशीनों का प्रयोग उत्पादन बढ़ाने के लिए किया जाता है। चुंकी औद्योगीकरण ने यूरोपीय समाज में बहुत व्यापक परिवर्तन लाया था, इसलिए उस समय के सामाजिक दार्शनिकों को समाज की समस्याओं, नयी परेशानियों एवं उसके भविष्य ने उन्हें काफी चिंतित कर दिया था। इसी चिंता ने 19वीं सदी में यूरोप में समाजशास्त्र को जन्म दिया। इतने बड़े पैमाने पर यदि औद्योगीकरण नहीं होता तो संभवतः समाजशास्त्र की उत्पति नहीं होती। इससे पता चलता है कि औद्योगीकरण ने समाज के प्रत्येक भाग वे प्रत्येक तबके को प्रभावित किया हैं तो निश्चित तौर पर नगरीय व्यवस्था भी प्रभावित हुई होगी। जहां तक नगरीय विकास की बात है तो नगरीकरण का अर्थ कृषि आधारित अर्थव्यवस्था से औद्योगीकरण की ओर बढ़ना है। अर्थात ग्रामीण समाज या परिवेश का शहरी वातावरण में बदलना एवं नये शहरों की उत्पति या पुराने शहरों के फैलाव से है। जिसमें ग्रामीण नगरीय मूल्यों को अपने जीवन में अपनाते है। इस शोध पत्र के माध्यम से भी यही बताने का प्रयास किया गया है कि झारखण्ड के दो शहरों रांची व जमशेदपुर में नगरीय विकास ने कितनी और कैसी भूमिका निभाई है? अर्थात औद्योगीकरण ने यहां के समाज को कितना परिवर्तित किया है? चूंकी ये दोनों ही शहर झारखण्ड की रीढ़ है और रांची में जहां एच.इ.सी. की स्थापना हुई वहीं जमशेदपुर में टाटा स्टील की। जिससे औद्योगीकरण का विस्तार होता गया।

मुख्य शब्द औद्योगीकरण, नगरीकरण, नगरीय विकास, जातिवाद, राजनीतिक, शहर, गांव।

औद्योगीकरण एवं नगरीय विकास :

आधुनिक नगरीकरण का तात्पर्य उस नगरीकरण से है जो औद्योगीकरण पर आधारित है। औद्योगिक क्रांति के पूर्व होने वाले नगरीकरण को परंपरागत नगरीकरण के नाम से जाना जाता था। आधुनिक नगरीकरण औद्योगीकरण का सीधा प्रतिफल है। आधुनिक नगरीकरण की प्रमुख विशेषताओं में महानगरों की उत्पति है। आज विश्व में ऐसे भी नगर है जिसकी आबादी 2 करोड़ के आसपास है। जो बहुत सारे मुल्कों की समस्त आबादी से भी ज्यादा है। औद्योगिक क्रांति के पूर्व विश्व के नगरीकरण की विशेषता कस्बों एवं नगरों की उत्पति थी, लेकिन औद्योगिक क्रांति के बाद विश्व के विभिन्न देशों में महानगरों एवं महा महानगरों या नगरों के नगर की उत्पति हुई। जनसंख्या के दृष्टिकोण से ऐसे नगर जिसकी आबादी 10 लाख या उससे अधिक है उसे महानगर कहा जाता है। जिसकी आबादी 100 लाख है उसे महा महानगर कहा जाता है। अभी विश्व के महानगरों में मुंबई, कलकत्ता एवं दिल्ली को क्रमशः 6वां 9वां एवं 17वां स्थान प्राप्त है।[1]

आधुनिक नगरीकरण की एक प्रमुख विशेषता यह है कि औद्योगीकरण के कारण नगरों की श्रृंखला की उत्पति हो रही है, जिसे नगरीय श्रृंखला या उपनगरीय समूहन कहा जाता है। एक नगरमाल के अंतर्गत बहुत सारे छोटे–छोटे नगर होते है। वे इस तरह से एक दूसरे जुड़े रहते हैं। कि विभिन्न

* व्याख्याता चीतरपुर कॉलेज, रामगढ़

नगरों के बीच कुछ अंतर दिखाई नहीं पड़ता। उद्योग एवं व्यवसाय के विकास से कई नगर इस प्रकार जुड़ जाते हैं कि वे एक हीं नगर के समान दिखाई पड़ते हैं और यदि ऐसे नगरों की श्रृंखला की आबाद 1 करोड़ की हो तो उपनगरीय समूहन कहा जाता है।[2] एक समय था जब नगरीकरण औद्योगिक क्रांति से गुजरने वाले देशों की ही मुख्य विशेषता थी, तो आज नगरीकरण समस्त मानव समाज की विशेषता हो गयी है।

तीसरी दुनिया जो मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी और जहाँ उपनिवेशवाद के कारण आर्थिक शोषण अपनी चरम सीमा पर था आज वहां भी नगरीकरण की प्रक्रिया तेज हो गई है। आज विश्व के अधिकांश महानगर तीसरी दुनिया में ही अवस्थित हैं। जो कुछ भी नगरीकरण की प्रक्रिया चल रही है वह मुख्य रूप से तीसरी दुनिया के देशों में ही चल रही है। विश्व के महानगरों को प्रौद्योगिकी और विज्ञान के विकास ने एक सूत्र में पिरों दिया है। इसी नगरीकरण की प्रक्रिया के कारण हमारे जीवन का विश्वव्यापीकरण हो रहा है। आधुनिक नगरीकरण के कारण विश्व स्तर पर शहर गांव प्रवास की प्रक्रिया में काफी वृद्धि हुई है। लोग गांवों से उठकर शहर में आये हैं। विभिन्न देशों के बीच भी अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की प्रक्रिया काफी तेज हुई है।[3] एक समय था जब आज विकसित कहे जानेवाले देशों के लोग उपनिवेश के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाया करते थे तो आज उसके विपरीत विकासशील देशों के मेघावी लोग एक बेहतर जीवन की तलाश में अपना देश छोड़कर विकसित देशों की ओर जाने के लिए परेशान है। विकासशील देशों की समाने मेघा पलायन की समस्या हो रही है। सच तो यह है कि समस्या यहीं तक नहीं रूकी हुई है बल्कि अब तो विकासशील देशों के पूंजीपति लोग भी व्यवसाय के लिए विकसित देश ही पसंद कर रहे हैं। बहुत सारे विकसित देशों की अर्थव्यवस्था के अंतर्गत विकासशील देशों के काफी पैसे छिपे पड़े है। पर इसके साथ यह भी यथार्थ है कि अधिक से अधिक मुनाफा कमाने और आर्थिक शोषण के लिए विकसित देशों से बहुराष्ट्रीय कंपनियां विकासशील देशों में आ रही हैं। आधुनिक नगरीकरण ने विश्व स्तर पर हमारी संस्कृति को बहुत ही क्रांतिकारी ढंग से प्रभावित किया है। लोगों के जीवन के मानदंड और मूल्य बदल गए हैं। परंपरावादी विचारधारा की जगह वैज्ञानिक मिजाज का विकास हुआ है। शहरों के अंतर्गत सर्वदेशीय मन और मिश्रित संस्कृति में वृद्धि हुई है। यह सही है कि शहरों में जातिवाद, नृजातिवाद और प्रजातिवाद देखने को मिलता है इसके बावजूद यह भी सही है कि विभिन्न जातियों, संप्रदायों एवं प्रजातियों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक दूर में काफी कमी आई है। हम सभी एक साथ रहने लगे हैं। परिवार के मिश्रित स्वरूप की उत्पति हो रही है।

नगरीकरण एवं औद्योगीकरण :

आधुनिक नगरीकरण एवं औद्योगीकरण के बीच बहुत सीधा संबंध है। क्योंकि विश्व स्तर पर नगरीकरण का मुख्य आधार औद्योगीकरण को ही माना जाता है। लेकिन इन दो प्रक्रियाओं के बीच संबंधों को लेकर सामाजिक विज्ञानों में काफी विवाद बना हुआ है। पहला विचार यह है कि पाश्चात्य देशों में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की प्रक्रिया साथ–साथ चलती है। नगरीकरण औद्योगीकरण का प्रत्यक्ष नतीजा रहा है। दूसरा विचार यह है कि अधिकांश विकासशील देशों में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के बीच कोई संबंध नहीं है। तर्क यह दिया जाता है कि यहां नगरीकरण औद्योगीकरण से आगे निकल चुका है अर्थात तीसरी दुनिया के अंतर्गत जनसंख्या विस्फोट का परिणाम है। राय टर्नर[4] ने अपनी पुस्तक इंडियाज अरबन फ्यूचर में बताया है कि भारत में औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के बीच कोई संबंध नहीं है। और भारतीय नगरीकरण के लिए अति–नगरीयकरण जैसे अवधारणाओं को प्रयोग में लाया जाता है। हॉसर[5] ने भी कहा है कि विकासशील देशों में शहरों में शहरी लोग नहीं बल्कि शहरी किसान रहते हैं। वहीं मक्गी ने तीसरी दुनिया को छदम नगरीकरण कहा है। पाश्चात्य दुनिया के परिपेक्ष्य में भारत का नगरीकरण विरोधाभास से भरा हुआ है। उनके अनुसार यूरोप ओर अमेरिकाा में नगरीकरण के शुरूआती दौर में उद्योगों के विकास के चलते गांव से शहर रोजगार के लि ए आते थें। अर्थात वहां नगरीकरण औद्योगीकरण का एक नतीजा था। जब औद्योगीकरण एक नगरीकरण की पक्रिया वहां चल रही थी तो प्रवास की प्रक्रिया के चलते खेली पर आश्रित लोगों की आबादी उसी अनुपात में धीरे–धीरे घटती गई। इसके विपरित भारत में नगरीकरण औद्योगीकरण का प्रतिफल नहीं है, बल्कि यह

ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती हुई आबादी के चलते बढ़ती हुई बेरोजगारी का फल है। गांव में इतनी भूसंपदा अब लोगों के पास न हीं है कि लोग वहां उपार्जन कर अपना जीवन यापन कर सकें। गांवों में लोगों के विकास की संभावनाएँ रूक सी गई है। आबादी इतनी बढ़ गई है कि वहां पर अतिरिक्त श्रमिक की समस्या उत्पन्न हो गई है। जिसके कारण गरीब लोग गांव को छोड़कर शहरों में काम करना पसंद करते हैं। दूसरे शब्दो में भारतीय नगरीकरण गांवों में बढ़ती हुई गरीबी का नतीजा है। औद्योगिक विकास का नहीं। पिछले पचास वर्षों में खेती एवं उद्योगों पर निर्भर व्यक्तियों के अनुपात में नाम मात्र का परिवर्तन आया हैं आज भी भारत में सतर प्रतिशत से ज्यादा लोग खेती बारी पर ही निर्भर करते हैं। भारतीय जनगणना की रिपोर्ट को देखें तो यहां पर शहर में 3 से 5 प्रतिशत लोग खेती बारी के माध्यम से अपना जीवन यापन करते हैं।[6]

अध्ययन क्षेत्र :

राँची जिला–रांची जिला का क्षेत्रफल 4962.82 वर्ग किमी है। जिसकी कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2912022 है। यहां की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 23.90 प्रतिशत है। झारखण्ड की कुल जनसंख्या का 8.83 प्रतिशत भाग रांची में निवास करता है। जनसंख्या की दृष्टि से यह झारखण्ड का पहला जिला है। रांची जिले में 0–6 वर्ष की आयु के बच्चों की कुल संख्या 388052 है जिसमें लड़कों की संख्या 200327 और लड़कियों की संख्या 187725 है। यहां की लिंगानुपात 950 हैं। रांची की साक्षरता दर 77.13 प्रतिशत है। जिसमें पुरूष साक्षरता 85.63 प्रतिशत और महिला साक्षरता 68. 20 प्रतिशत है।[7] और इसका जनसंख्या घनत्व 557 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. है। 1869 में रांची में नगरपालिका की स्थापना की गई। उस समय घरों की संख्या मात्र 1617 थी और जनसंख्या 12086 थी। 1881 में जिला मुख्यालय को लोहरदगा से रांची लाया गया। रांची नगर निगम की स्थापना 15 सितंबर 1979 में हुई। इसमें वार्डों की संख्या 56 है। जिसका क्षेत्रफल 225 वर्ग कि.मी. है। रांची में लगभग 108 स्लम क्षेत्र है जिनकी संख्या 2,50,043 है।

जमशेदपुर जिला–यह पूर्वी सिंहभूम जिले का मुख्यालय है। यहां का क्षेत्रफल 3533.35 वर्ग कि. मी. है। जिसकी कुल जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 2291032 है। यहां की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 18.90 प्रतिशत है। झारखण्ड की कुल जनसंख्या का 6.53 प्रतिशत भाग यहां निवास करता है। जनसंख्या की दृष्टि से यह झारखण्ड का तीसरा जिला है। इस जिले की पुरूष संख्या 1175696 तथा महिला संख्या 1115336 है। यहा की महिला साक्षरता 67.33 प्रतिशत तथा पुरूष साक्षरता 84.51 प्रतिशत हैं यहां की श्रमिक जनसंख्या 692080 है, जिसमें पुरूष श्रमिक 501110 तथा महिला श्रमिक 190970 है।[8] इसमें गैर कृषक श्रमिक 53.93 प्रतिशत और घरेलू उद्योग श्रमिक 3.21 प्रतिशत है। निश्चित तौर पर यहां पर कार्य करने वाली अर्थात कामकाजी महिलाओं की एक बड़ी संख्या है।

औद्योगीकरण का नगरीय विकास पर प्रभाव :

विश्व में बदलती हुई राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक सास्कृतिक विचारधाराओं में होने वाली परिवर्तन तथा विविधताओं के कारण मनुष्य ने सामान्य रूप से अपने मन में बनने वाली संकल्पनाओं को परिवर्तित कर लिया है। जिसमें उसे अपने आपको समाहित करना हैं एकता, समानता, व्यापार व वाणिज्या आदि मनुष्य के सामने के अहम विंदू है, जो विविधतायें दर्शा रहे है। अपने मन के इस विचार के अनुसार मनुष्य ने ऐतिहासिक रूप से अपने महत्वाकांक्षाओं को दूसरों के साथ के संबंधों के संदर्भ में परिवर्तित कर लिया है। इन तथ्यों से पता चलता है कि नगरीकरण के कारण काफी सुखद परिवर्तन आए हैं। समें कोई संदेह नहीं है कि नगरीकरण से समाज को विभिन्न प्रकार का लाभ हुआ है। नगरीकरण का दुष्प्रकार्यात्मक प्रभाव भी काफी रहा है। वेश्यावृति, सफेदपोश अपराध, नशाखोरी, धूसखोरी, तस्करी कालाबाजारी तलाक नृजातिकेंद्रियतावाद आदि विभिन्न किस्म के अपराधा में एक अनैतिक व्यवहार विशेषतया शहरों में ही देखने को मिलते है। शहरी जीवन काफी अशांत एवं तनावपूर्ण हो गया है। यही कारण है कि गांवों की तुलना में शहरों में विभिन्न प्रकार के हृदय और मानसिक रोगों से ग्रसित लोगों की बहुत बड़ी संख्या पायी जाती है। आज अमेरिका में विश्व का सबसे अधिक पागलखाना पाया जाता है। वहां अधिकांश लोग कम से कम एक बार मानसिक चिकित्सा के लिए डॉक्टरों के पास अवश्य पहुंच रहे हैं। पारिवारिक जीवन काफी तनावपूर्ण है। वहां औसतन पति पत्नी 6 से 7 साल तक साथ

रहते हैं।[9] संभव है कि विश्व में सबसे अधिक तलाक भी उसी देश में पाया जाता है। इस प्रकार की अनेकानेक समसयाएं औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की उपज है चूंकी बढ़ती आबादी की सुख सुविधा के लिए आर्थिक विकास जरूरी है इसलिए प्रत्येक समाज को औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के दौर से गुजरना ही होगा।

जहां तक भारतीय समाज व विशेषकर रांची व जमशेदपुर की बात है तो यहां पर नगरीय विकास पर व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ता है। जातिगत पेशा में व्यापक परिवर्तन दिखाई पड़ता है। अब पेशाा का निर्धारण जन्म के आधार पर न होकर कर्म से निर्धारित हो रहा है। बहुत से ब्राहम्ण और दलित एक ही होटल में खाना खाते है, एक ही गाड़ी में सफर करते है, एक साथ बैठकर विचार विमर्श करते है और कही दलित अधिकारी के नीचे ब्राहम्ण कर्मचारी भी काम करते पाये जाते है और जरूरत पड़ी तो अस्पतालों में हरिजन का रक्त ब्रहम्णों को भी चढ़ाया जाता है। दूसरी ओर अस्पृश्यता एवं जातिगत स्वरूपों में भी व्यापक परिवर्तन दिखाई पड़ता है। जाति व्यवस्था का घोर राजनीतिककरण हुआ है। जाति के नाम पर सभाओं और महासभाओं का सार्वजनिक जगहों पर आयोजन किया जा रहा है। लोग खुलेआम जाति के नाम पर वोट मांगते है। जातीय आधार पर विभिन्न कार्यो को संपादन करने का आग्रह भी किया जाता है। आजादी के बाद भारत में जिना शिक्षा औद्योगीकरण व नगरीकरण का विकास हुआ है उतना ही जातिवाद फैला है। अपनपढ़ लोगों की तुलना में पढ़े लिखे लोग कुछ ज्यादा ही जातिवादी हो गए है। पहले तो तथाकथित उच्च जाति के लोग जातिवादी थे लेकिन अब तो जिस किसी भी व्यक्ति को मौका मिलता है वह जातिवादी आचरण करने में नहीं हिचकता है।[10] यह बात और है कि हम जातिवादी कहलाना अपमानजनक समझते है। पर हम आदर्श व्यति का चेहरा बनकर जाति और धर्म के नाम पर कुछ भी पक्षपातपूर्ण व्यवहार करने से नहीं हिचकते हैं। जनसंचार के माध्यमों एवं प्रोद्योगिकी ने जातिवाद को बढ़ाने में काफी सहयोग दिया है। आज जितना जातिवाद शहरों में पाया जाता है। उतना शायद गांवों में नहीं। पढ़े लिखे लोग अनपढ़ लोगों की तुलना में जातीय पूर्वाग्रह से कुछ ज्यादा ही ग्रसित होते हैं। नौकरी देने के समय अधिकारीग रण आवेदकों की योग्यता से अधिक उसकी जाति जानने में रूचि लेते हैं।

दूसरी ओर औद्योगीकरण एवं नगरीकरण ने मानव अधिकारों को जागृत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मानव अधिकारों पर विचार करने के क्रम में राज्य और मानव अधिकारों के प्रश्न पर विस्तार से चर्चा हुई है और इस सिलसिले में राज्य के मुख्य तत्त्व सम्प्रभुता और मानव अधिकारों पर विमर्श रोचक और परस्पर विरोधी विचार क्रम से जुड़ा है। तर्क यह है कि सशक्त राज्य उन स्थितियों की स्थापना के लिये सहायक होता है जो मानव अधिकारों के लिए अधिक अनुकूल होती हैं। कमजोर राज्यों में अवस्थाएँ मानव अधिकारों की स्थापना के लिए प्रतिकूल होती हैं और वे मानव अधिकारों की स्थापना की सम्भावनाओं को कम करती हैं। इस बहस पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राज्य की अपनी स्थितियां, मानव अधिकारों की उपलब्धिप के लिए एक मानक हो सकती हैं।

मानव अधिकारों पर बहस में राज्य की व्यक्ति के साथ प्रताड़ना और उनके अधिकारों की अवहेलना एक महत्वपूर्ण पहलू है किन्तु यह मानव अधिकारों की सीमित व्याख्या है। मानव अधिकारों के वर्गीकरण को मुख्यतः दो भागों में रखा जा सकता है।

पहला, नागरिक और राजनैतिक अधिकारों से जुड़ा है। ये अधिकार मूलतः एक नागरिक समाज (सिविल सोसायटी) का निर्माण करते हैं। इस वर्ग में स्वतंत्रता, सम्मान और अधिकारों का उल्लेख प्रमुख है। इन अधिकारों के क्रम में यह बात महत्वपूर्ण है कि इनकी स्थापना में किसी भी प्रकार के भेद की चर्चा नही की गई है। यह समानता उन समाजों के लिये अधिक महत्वपूर्ण है, जो असमानताओं के शिकार रहे हैं। जाति, रंग और लिंग के आधार पर भेदभाव को समाप्त करना उन सब समाज व्यवस्थाओं के लिए महत्वपूर्ण है जो लम्बे समय से इस आचरण से ग्रस्त है। राजनैतिक स्वतंत्रता की घोषणाएँ उन समाजों के लिये विशेष रूप से उपयोगी हैं, जहाँ स्वतंत्रताओं को न केवल कुचला गया है, वरन् लम्बे समय तक उपेक्षा भी की गई है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता अभिव्यक्ति के स्वतंत्र निर्माण के अभाव में सम्भवः नहीं है।

हम सभी इस तथ्य से परिचित हैं कि भारतीय समाज में कमोबेश सभी समुदायों व वर्गों में मानव अधिकार के उल्लंघन की घटनायें निंरतर होती रही हैं। हमारे लिए यह चुनौती का विषय है और चिंता भी। यद्यपि हमारे संविधान में हर प्रकार के भेदभाव की समाप्ति के लिए पर्याप्त प्रावधान किये गये हैं फिर भी स्थिति संतोषजनक नहीं कहीं जा सकती। बाल मजदूरी, महिला हिंसा, सांप्रदायिक हिंसा, पुलिस हिरासत में प्रताड़ना, गरीब आदिवासी एवं दलितों के साथ अत्याचार, शोषण बलात्कार की घटनायें हमारे मन को विचलित करती रहती हैं। इतना ही नहीं सांप्रदायिक हिंसा, आतंकवाद एवं नस्ल के नाम पर निरीह प्राणीयों की हत्या व उत्पीड़न मानव अधिकारों का सीधा अतिक्रमण है। इन परिस्थितियों को उत्पन्न करने में औद्योगीकरण की प्रमुख भूमिका रही है।

भारतीय शहरों को देखने से ऐसा नहीं लगता है कि वह पूरी तरह शहर है। शहरों के अंतर्गत यत्र तत्र गांव का वातावरण भी देखने को मिलता है। कहीं बैलगाड़ी तो कहीं टमटम की सवारी देखने को मिलती है। तो कहीं सड़कों पर गौशाला भी देखने को मिलता है। सड़कों के किनारे कुछ लोग परंपरागत पेशों के आधार पर अपना जीवन निर्वाह भी करते पाये जाते हैं। जैसे मोची जूता मरम्मत करते हुए तो नाई दाढ़ी बाल बनाते हुए और धोरी कपड़ों पर आइरन करते हुए। कुछ लोग सड़कों पर साग सब्जी भी बेचते हुए दिखाई पड़ते है। उसी तरह शहरों के अंदर कहीं कुछ परती जमीन होती है। तो वहां लोग खेती का काम करते हुए दिखाई पड़ते हैं। शहर का आकार जितना छोटा होता है ग्रामीण परिवेश वहां उतना ही परिलक्षित होता है। बड़े शहरों के अंतर्गत कहीं–कहीं ग्रामीण पॉकेट दिखाई पड़ते है। लुइ वर्थ ने कहा है कि बड़े नगरों के विकास से परंपरागत सामाजिक संरचना एवं मूल्य टूट जायेंगे पर ऐसा दिखाई नहीं पड़ रहा।

नगरीकरण के कारण प्राथमिक समूह का महत्व घटा है। शहरों में विभिन्न प्रकार के द्वितियक समूह पाये जाते है। जिसके माध्यम से हम अपनी इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश करते है सामुदायिक जरूरतों एवं जीवन पड़ोस एवं परिवार का महत्व व्यक्तिगत जीवन में काफी घटा है। पहले ही तुलना में व्यक्ति अब इतना अधिक व्यक्तिवादी एवं स्वार्थी हो गया है कि शहरी जीवन में वयं भावना में काफी कमी आई है। और उसकी जगह अहम् की भावना का विकास हो गया है। जैसे–जैसे शहरों का विकास होता है। वैसे–वैसे उसकी आबादी धीरे–धीरे शहरों के बाहर फैलने लगती है। फलस्वरूप शहर धीरे–धीरे आसपास के गांवों में प्रवेश करने लगता है। और शहर के बाहरी हिस्से पर अवस्थित गांव शहर का एक अभिन्न अंग बन जाता है।

अंतिम रूप से यह कहा जा सकता है कि वर्तमान स्थिति में आधुनिकीकृत नियमों और पारंपरिक नियमों को मिलाकर एक नये नियम बनाने की जरूरत है। जहां तक की आधुनिकता की बात है तो यह पारंपरिक रूप से स्थापित करने के खिलाफ होता है क्योंकि इसके अनुसार विकास की प्रक्रिया में ये पारंपरिक संस्थायें कहीं न कहीं बाधक होती है। जिससे वे नई विकास की संरचना स्थापित करना चाहते हैं। जिससे आवश्यकता आधारित विकास योजनाओं का संचालन किया जा सके। इसलिए आधुनिकता एलिन के सिद्धांतों पर चलता है। जिसमें अंतिम छोर तक विकास की प्रक्रिया को पहुंचाने की कोशिश की जाती है।

न ही हमारे देश में महिलाओं का स्थान विज्ञापन पार खुलेपन का है। पाश्चात्य संस्कृति के कारण आज विज्ञापनों में महिला का खुला प्रदर्शन भी महिलाओं के शोषण एवं बढ़ते अत्याचार का कारण बन चुका है। तात्पर्य यह है कि हमारे देश की परम्परा, सभ्यता, संस्कृति में महिलाओं को गृहणी एवं सम्मानीय माना गया है, वहीं पाश्चात्य संस्कृति में महिला को भोगवादी बिकाऊ वस्तु माना गया है। अतः यह आवश्यक हो गया है, कि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को पुनः जीवित करें और अपनी मानसिकता को इसी अनुरूप बनाऐ रखें कि महिलाओं का सम्मान सर्वोपरि है। महिलाओं को भी अपने सम्मान एवं शोषण के बारे में खुद सतर्क रहना होगा। आज महिलायें खुलापन, उदारीकरण और नारी स्वतंत्रता के नाम पर अपनी सोच को स्थिर नहीं रख पा रही है। लेकिन कोई भी कदम उठाने से पूर्व उन्हें यह अच्छी तरह सोच–समझ लेना चाहिए कि मर्यादा में रहकर ही महिला 'अस्तित्व' सुरक्षित रह सकता है।

आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी तरक्की का परचम लहरा रहीं है। महिलाएँ वायु सेना में भर्ती होकर देश की रक्षा सेवा का भार संभाल रही हैं। रक्षा सेवाओं में महिलाओं की भागीदारी निःसंदेह गौरव की बात है, क्योंकि अभी तक महिलाएँ सभी क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधें से कंधा मिलाकर सहयोग कर रही थीं, किन्तु कठिन सेवाओं ामें उनकी संख्या अल्प थी। पर अब कोई भी क्षेत्र महिलाओं की सेवा से अछुता नहीं रहा है। आज की महिला दहेज के विरूद्ध अपनी आवाज बुलंद करती है। दहेज के विरूद्ध शादी के मंडप में फेरों से इन्कार करने के मामले प्रकाश में आ रहे हैं, एवं बाल–विवाह के विरोध में भी लड़कियाँ खुलकर सामने आ रही है। सरकार द्वारा किये गये प्रयासों की सार्थकता भी दिखाई दे रही है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि रांची जमशेदपुर के समाज में औद्योगीकरण व नगरीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा है।

संदर्भ सूची

1. हाउसर, पी. एम., 1957? अरबनाइजेशन इन एशिया एण्ड द फार इस्ट, युनिसको, कलकत्ता, पृ.सं. 110
2. गोल्डेन, हाउल्ड, 1954, अरबनाइजेशन एण्ड द डेवलपमेंट इन प्री इंडस्ट्रियल एरियास, इकोनोमिक डेवलपमेंट एण्ड कल्चरल चेंज, वॉल्यूम–3, पृ.6–9
3. स्मेल्स, ए.ई., 1975, डिफिनिशन एण्ड मेजरमेंट ऑफ अरबनाइजेशन, जॉर्ज फिलिप एण्ड संस लिमिटेड, लंदन, पृ. 23
4. रॉय, टर्नर, 1962, इंडियाज अरबन फयूचर, बर्कले एण्ड लॉस ऐंजिल्स युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, पृ. 49
5. पूर्वोक्त हाउसर, पृ. 98
6. सिंह, जे.पी., 1984, द चेंजिंग हाउसहोल्ड साइज इन इंडिया, जर्नल ऑफ एशियन एण्ड अफ्रीकन स्टडीज, वाल्यूम–14, पृ. 1–2
7. भारत की जनगणना, 2011
8. भारत की जनगणना, 2011
9. स्सेन, ससकिया, 1991, द ग्लोबल सिटी न्यूयॉर्क, लंदन टोकियो, प्रिंसटन युनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 34
10. सिंह, जे.पी. 2003, सामाजिक परिवर्तन, प्रेंटिस हाल ऑ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ. 192